Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 3088–3093

A COMPARATIVE STUDY OF LEARNING PROCESS AND SOCIO-EMOTIONAL ADJUSTMENT OF CLASS 10 STUDENTS IN GOVERNMENT AND PRIVATE SCHOOLS OF FARIDABAD DISTRICT

फरीदाबाद जिले के सरकारी और निजी स्कूलों में कक्षा 10 के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और सामाजिक-भावनात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

Kiran Kumari [1], Dr. Poonam Gaud [2]

[1] Research Scholar, Lingayas Vidyapeeth University, Nacholi, Faridabad, Haryana, India
[2] Associate Professor, Lingayas Vidyapeeth University, Nacholi, Faridabad, Haryana, India

ABSTRACT

English: The objective of the present study is to examine the differences in learning process and socio-emotional adjustment between grade 10 students studying in government and private schools in Faridabad district. The secondary school stage is a crucial transitional phase where learners develop essential study habits, cognitive strategies, and socio-emotional competencies that significantly influence their academic success and overall well-being. Using a comparative research design, data were collected from a representative sample of grade 10 students using standardized instruments to assess learning styles and adjustment levels. The findings are expected to reveal differences between government and private school students in terms of academic attitudes, peer relationships, emotional regulation, and adaptability to the school environment. The study further seeks to explore whether school type (government versus private) significantly impacts students' learning outcomes and socio-emotional development. The results of this study may provide valuable insights to educators, policymakers, and parents in developing effective teaching strategies, supportive learning environments, and promoting student well-being in different types of schools.

Hindi: वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य फरीदाबाद जिले के सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा 10 के छात्रों के बीच सीखने की प्रक्रिया और सामाजिक-भावनात्मक समायोजन में अंतर की जाँच करना है। माध्यमिक विद्यालय चरण एक महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन चरण है जहाँ शिक्षार्थी आवश्यक अध्ययन आदतें, संज्ञानात्मक रणनीतियाँ और सामाजिक-भावनात्मक दक्षताएँ विकसित करते हैं जो उनकी शैक्षणिक सफलता और समग्र कल्याण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। तुलनात्मक शोध डिज़ाइन का उपयोग करते हुए, कक्षा 10 के छात्रों के प्रतिनिधि नमूने से मानकीकृत उपकरणों के माध्यम से सीखने की शैलियों, और समायोजन स्तरों का आकलन करने के लिए डेटा एकत्र किया गया था। निष्कर्षों से शैक्षणिक दृष्टिकोण, सहकर्मी संबंधों, भावनात्मक विनियमन और स्कूल के वातावरण के अनुकूल होने के संदर्भ में सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों के बीच भिन्नताओं को उजागर करने की उम्मीद है। अध्ययन आगे यह पता लगाने का प्रयास करता है कि क्या स्कूल का प्रकार (सरकारी बनाम निजी) छात्रों के सीखने के परिणामों और सामाजिक-भावनात्मक विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षकों, नीति निर्माताओं और अभिभावकों को प्रभावी शिक्षण रणनीतियों, सहायक शिक्षण वातावरण और विभिन्न प्रकार के स्कूलों में छात्र कल्याण को बढ़ावा देने में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

Keywords: Learning Process, Socio-Emotional Adjustment, Class 10 Students, Government Schools, Private Schools, सीखने की प्रक्रिया, सामाजिक-भावनात्मक समायोजन, कक्षा 10 के छात्र, सरकारी स्कूल, निजी स्कूल

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.6490

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है जो न केवल व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का विकास करती है बल्कि उसके सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक मूल्यों का भी पोषण करती है। स्कूल, विशेष रूप से किशोरावस्था के दौरान, छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास को आकार देने में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। इस अवस्था में, शिक्षार्थी तेज़ी से शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों से गुजरते हैं जो सीधे उनकी अध्ययन आदतों, सीखने की रणनीतियों और समायोजन पैटर्न को प्रभावित करते हैं। कक्षा 10 भारत में एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक मील का पत्थर है, क्योंकि छात्रों को बोर्ड परीक्षाओं में शामिल होना पड़ता है जो उनके भविष्य के शैक्षणिक और करियर पथ को प्रभावित करती हैं। इसलिए, इस अवस्था के दौरान छात्र कैसे सीखते और समायोजित होते हैं, इसकी समझ शिक्षकों, नीति निर्माताओं और अभिभावकों, दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

स्कूल का प्रकार सरकारी या निजी अक्सर छात्रों के शैक्षिक अनुभवों को प्रभावित करता है। भारत में, सरकारी स्कूलों का प्रबंधन और वित्तपोषण राज्य द्वारा किया जाता है, जो विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों को सस्ती शिक्षा प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, निजी स्कूलों का प्रबंधन स्वतंत्र निकायों या संगठनों द्वारा किया जाता है और ये अक्सर अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों को शिक्षा प्रदान करते हैं। इन स्कूलों के संसाधन, शिक्षण पद्धतियाँ और शैक्षणिक वातावरण काफी भिन्न होते हैं, जो बदले में छात्रों की सीखने की प्रक्रिया, अध्ययन की आदतों और सामाजिक-भावनात्मक समायोजन को प्रभावित कर सकते हैं।

1.1. सामाजिक-भावनात्मक समायोजन

समायोजन वह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं और अपने परिवेश के बीच सामंजस्य बनाए रखता है। सामाजिक-भावनात्मक समायोजन में व्यक्ति की भावनाओं को प्रबंधित करने, सहकर्मियों के साथ स्वस्थ संबंध बनाने और स्कूल की माँगों के अनुकूल ढलने की क्षमता शामिल होती है। किशोरावस्था के दौरान, साथियों का दबाव, शैक्षणिक तनाव और पहचान निर्माण जैसी सामाजिक-भावनात्मक चुनौतियाँ सीखने के परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं (सिंह और अरोड़ा, 2018)। निजी स्कूलों के छात्रों को प्रदर्शन के दबाव का सामना करना पड़ सकता है, जबकि सरकारी स्कूलों के छात्रों को सीमित संसाधनों और सामाजिक-आर्थिक बाधाओं से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है (वर्मा और राठी, 2022)। इसलिए, एक तुलनात्मक विश्लेषण इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है कि स्कूल का वातावरण समायोजन पैटर्न को कैसे प्रभावित करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

यद्यपि शैक्षणिक उपलब्धि और अध्ययन की आदतों पर काफी शोध किया गया है, लेकिन कम अध्ययनों ने सीखने की प्रक्रिया और सामाजिक-भावनात्मक समायोजन पर स्कूल के प्रकार के संयुक्त प्रभाव का पता लगाया है, विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में। फरीदाबाद के हरियाणा के एक शैक्षिक केंद्र के रूप में उभरने के साथ, यह समझना आवश्यक हो जाता है कि सरकारी और निजी स्कूलों के छात्र इन महत्वपूर्ण आयामों में कैसे भिन्न हैं। ये निष्कर्ष वर्तमान प्रथाओं में कमियों की पहचान करने और शिक्षण वातावरण एवं छात्र कल्याण में सुधार हेतु हस्तक्षेप सुझाने में मदद कर सकते हैं।

यह अध्ययन शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है जो सीखने और समायोजन के बीच अंतर्संबंध पर ज़ोर देते हैं। पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत बताता है कि किशोर औपचारिक संक्रियात्मक सोच में सक्षम होते हैं, जिससे तार्किक तर्क और अमूर्त विचार संभव होते हैं (पियाजे, 1972)। एरिकसन का मनोसामाजिक सिद्धांत किशोरावस्था को पहचान निर्माण के एक ऐसे चरण के रूप में रेखांकित करता है जहाँ सामाजिक-भावनात्मक चुनौतियाँ व्यक्तित्व को आकार देती हैं (एरिकसन, 1968)। ब्रोंफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत छात्रों के विकास को प्रभावित करने में परिवार, विद्यालय और समुदाय के महत्व को और रेखांकित करता है (ब्रोंफेनब्रेनर, 1979)। ये ढाँचे विभिन्न विद्यालय संदर्भों में सीखने की प्रक्रिया, अध्ययन की आदतों और सामाजिक-भावनात्मक समायोजन के बीच परस्पर क्रिया को समझने के लिए एक मज़बूत आधार प्रदान करते हैं।

3. अध्ययन के उद्देश्य

यह अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया गया है:

1) फरीदाबाद जिले के सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा 10 के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया की तुलना करना।
2) सरकारी और निजी स्कूलों में कक्षा 10 के छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक समायोजन स्तरों की तुलना करना।

3.1. अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1) सरकारी और निजी स्कूलों के कक्षा 10 के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2) सरकारी और निजी स्कूलों के कक्षा 10 के छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. संबंधित साहित्य की समीक्षा

- गुप्ता और मेहरा (2017) ने पाया कि निजी स्कूल के छात्रों ने सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में बेहतर अध्ययन की आदतें प्रदर्शित कीं, जिसका मुख्य कारण माता-पिता का सहयोग और संस्थागत सुविधाएँ थीं।
- रानी और चौहान (2019) ने बताया कि सीमित संसाधनों के बावजूद, सरकारी स्कूल के छात्रों ने निजी स्कूल के छात्रों की तुलना में अधिक लचीलापन और अनुकूलनशीलता प्रदर्शित की।
- शर्मा और कौर (2020) ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और समायोजन के स्तर को बेहतर बनाने में सामाजिक-भावनात्मक शिक्षण कार्यक्रमों की भूमिका पर प्रकाश डाला।
- यादव (2021) ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति किशोरों में अध्ययन की आदतों और समायोजन दोनों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।
- वर्मा और राठी (2022) ने देखा कि निजी स्कूल के छात्रों को प्रदर्शन के दबाव से संबंधित अधिक भावनात्मक तनाव का सामना करना पड़ा, जबकि सरकारी स्कूल के छात्रों को आत्म-नियमन और साथियों के प्रभाव से जूझना पड़ा।
- कुमारी और सिंह (2023) ने सुझाव दिया कि संज्ञानात्मक और भावनात्मक दोनों क्षेत्रों पर केंद्रित एकीकृत हस्तक्षेप विभिन्न प्रकार के स्कूलों में छात्रों के समग्र परिणामों को बेहतर बना सकते हैं।
- भारतीय संदर्भ में हाल के अध्ययन (कुमारी और सिंह, 2023) स्कूली पाठ्यक्रम में सामाजिक-भावनात्मक शिक्षण कार्यक्रमों को शामिल करने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। इस तरह के हस्तक्षेपों से सरकारी और निजी, दोनों तरह के स्कूलों के छात्रों के भावनात्मक विनियमन, सामाजिक कौशल और समग्र स्कूल समायोजन में सुधार देखा गया है।
- गुप्ता और मेहरा (2017) ने निष्कर्ष निकाला कि निजी स्कूल के छात्र आमतौर पर संरचित शिक्षण वातावरण और संसाधनों की उपलब्धता के कारण बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं।
- हालाँकि, रानी और चौहान (2019) ने पाया कि सरकारी स्कूल के छात्र अक्सर पर्यावरणीय बाधाओं के कारण अनुकूलन कौशल, लचीलापन और संसाधनशीलता विकसित करते हैं।

5. शोध डिज़ाइन

अध्ययन में मात्रात्मक दृष्टिकोण के साथ एक वर्णनात्मक और तुलनात्मक शोध डिज़ाइन अपनाया गया। इसका उद्देश्य फरीदाबाद जिले के सरकारी और निजी स्कूलों में कक्षा 10 के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और सामाजिक-भावनात्मक समायोजन की जाँच और तुलना करना था। अध्ययन प्रकृति में क्रॉस-सेक्शनल है, क्योंकि चयनित छात्रों के बीच चर का आकलन करने के लिए एक ही समय में डेटा एकत्र किया गया था।

6. जनसंख्या और न्यादर्श

जनसंख्यारू अध्ययन की जनसंख्या में भारत के हरियाणा राज्य के फरीदाबाद जिले के सरकारी और निजी स्कूलों में नामांकित कक्षा 10 के सभी छात्र शामिल थे।

न्यादर्शः सुविधाजनक नमूनाकरण का उपयोग करके कुल 400 छात्रों का चयन किया गया।

- सरकारी स्कूलः 200 छात्र
- निजी स्कूलः 200 छात्र

न्यादर्श में दोनों लिंगों के छात्र शामिल थे जो स्वेच्छा से भाग लेने के इच्छुक थे। डेटा संग्रह के दिन अनुपस्थित या भाग लेने के इच्छुक छात्रों को अध्ययन से बाहर रखा गया।

7. डेटा संग्रह के लिए उपकरण

1) **सीखने की प्रक्रिया / सीखने की शैलियाँ:** अध्ययन में विद्यार्थियों की शिक्षण शैली का आकलन करने के लिए डॉ. अनु बलहारा और श्रीमती प्रिया मित्तल की शिक्षण शैली स्केल का उपयोग किया गया।

8. स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची

1) प्रो. ए. के. पी. सिन्हा और प्रो. आर. पी. सिंह द्वारा विकसित।
2) हिंदी जानने वाले भारतीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों (14-18 वर्ष) के लिए डिज़ाइन किया गया।
3) तीन क्षेत्रों में समायोजन को मापता हैर:
   - भावनात्मक
   - सामाजिक
   - शैक्षिक
4) अंतिम रूप: 60 आइटम (प्रत्येक क्षेत्र में 20 आइटम)।
5) प्रतिक्रिया प्रारूप: हाँ/नहीं प्रकार।
6) उद्देश्यर: मार्गदर्शन, परामर्श और शैक्षिक सहायता के लिए सुसमायोजित और असंयोजित छात्रों की पहचान करना।

9. डेटा संग्रह की प्रक्रिया

1) प्रश्नावली देने से पहले स्कूल अधिकारियों से अनुमति ली गई।
2) प्रश्नावली कक्षाओं में छात्रों को स्पष्ट निर्देशों और स्पष्टीकरणों के साथ वितरित की गईं।
3) प्रतिभागियों को गोपनीयता का आश्वासन दिया गया और छात्रों (और जहाँ आवश्यक हो, अभिभावकों) से सूचित सहमति प्राप्त की गई।
4) छात्रों से सहपाठियों से चर्चा किए बिना ईमानदारी से सूची पूरी करने के लिए कहा गया।

10. चर

- **स्वतंत्र चरर:** स्कूल का प्रकार (सरकारी, निजी), लिंग, अधिगम शैलियाँ
- **आश्रित चरर:** अधिगम प्रक्रिया, सामाजिक-भावनात्मक समायोजन (भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक, समग्र)

11. डेटा विश्लेषण

संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके किया गया। इसके लिए निम्न सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया:

1) वर्णनात्मक आँकड़े (Descriptive Statistics): औसत (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) – छात्रों की अधिगम शैलियाँ, तथा अनुकूलन स्तर का वर्णन करने हेतु।
2) स्वतंत्र नमूनों का t-परीक्षण (Independent Samples t-test): सरकारी और निजी विद्यालय के छात्रों की अनुकूलन स्कोर की तुलना हेतु।

12. परिणाम और चर्चा

12.2.अधिगम प्रक्रिया / अधिगम शैलियाँ

इस अध्ययन में 400 कक्षा 10 के छात्रों की शिक्षण शैली का आकलन करने के लिए डॉ. अनु बलहारा और श्रीमती प्रिया मित्तल की शिक्षण शैली स्केल का उपयोग किया परिणाम इस प्रकार रहे:

H01. सरकारी और निजी स्कूलों के कक्षा 10 के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Table 1 सीखने की प्रक्रिया (Learning Process)

समूह	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	t-तालिका मान (df=398, 0.05)	निष्कर्ष
सरकारी स्कूल	200	78.25	8.56	2.15	1.96	अस्वीकृत H0
निजी स्कूल	200	80.40	7.92			

व्याख्या:

गणना किया गया t-मूल्य 2.15 है, जो तालिका मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना H0 अस्वीकृत की जाती है। इसका अर्थ है कि सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सार्थक अंतर पाया गया है।

H02. सरकारी और निजी स्कूलों के कक्षा 10 के छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Table 2 सामाजिक-भावनात्मक समायोजन (Socio-Emotional Adjustment)

समूह	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	t-तालिका मान (df=398, 0.05)	निष्कर्ष
सरकारी स्कूल	200	72.50	9.20	0.87	1.96	स्वीकृत H0
निजी स्कूल	200	73.15	8.88			

व्याख्या:

गणना किया गया t-मूल्य 0.87 है, जो तालिका मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना H0 स्वीकृत की जाती है। इसका अर्थ है कि सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

13. निष्कर्ष (CONCLUSION)

1) इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। निजी स्कूल के छात्र अध्ययन के विभिन्न तरीकों और रणनीतियों में अधिक सक्षम पाए गए।
2) वहीं, सामाजिक-भावनात्मक समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसका तात्पर्य है कि छात्र चाहे किसी भी प्रकार के स्कूल में अध्ययनरत हों, उनका सामाजिक और भावनात्मक विकास लगभग समान है।
3) अध्ययन यह भी संकेत करता है कि विद्यालय का प्रकार विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और सीखने की दक्षता को प्रभावित करता है, जबकि सामाजिक और भावनात्मक विकास पर इसका प्रभाव नहीं है।
4) कुल मिलाकर, अध्ययन ने यह प्रमाणित किया कि अच्छी अध्ययन आदतें शैक्षणिक सफलता और सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

14. सिफारिशें (RECOMMENDATIONS)

- **अध्ययन कौशल विकास कार्यक्रम:** सरकारी स्कूलों में छात्रों की सीखने की प्रक्रिया सुधारने हेतु विशेष अध्ययन कौशल (Study Skills) विकास कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
- **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों को आधुनिक और प्रभावी अध्ययन तकनीकें सिखाने हेतु प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे छात्रों को सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकें।

- **समूह अध्ययन और समय प्रबंधन:** छात्रों को समूह में अध्ययन, समय प्रबंधन, नोट बनाने और पुनरावलोकन की रणनीतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- **सामाजिक-भावनात्मक समर्थन:** स्कूलों में छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक समायोजन को मजबूत करने हेतु काउंसलिंग सुविधाएँ और समूह गतिविधियाँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- **लिंग-विशिष्ट हस्तक्षेप:** यदि अध्ययन में कोई लिंग आधारित अंतर पाया जाता है, तो छात्राओं और छात्रों के लिए विशेष मार्गदर्शन और समर्थन कार्यक्रम लागू किए जा सकते हैं।
- **अभिभावक सहभागिता:** अभिभावकों को भी छात्रों की अध्ययन आदतों और सामाजिक-भावनात्मक विकास में शामिल किया जाना चाहिए, ताकि घर और विद्यालय दोनों स्थानों पर शिक्षा का प्रभाव बढ़ सके।

सन्दर्भ

बॉकनकैंप, वी. जे. (2019)। छात्रों की सीखने की शैली और पढ़ने की समझ पर प्रभाव के बारे में शिक्षक की धारणाओं की खोज [डॉक्टरेट शोधप्रबंध, प्रोक्वेस्ट निबंध प्रकाशन]।

क्रिटेस, जी. (2010)। स्कूल छोड़ने के कारणों का एक केस अध्ययन। एक्टा डिडक्टिका नेपोसेन्सिया, 3(4), 25-34।

डंकन, टी., एवं मैकेची, डब्ल्यू. (2010)। प्रश्नावली सीखने के लिए प्रेरित रणनीतियों का निर्माण।

लाउ, डब्ल्यू. डब्ल्यू. एफ., एवं युएन, ए. एच. के. (2010)। सीखने की शैलियों में लैंगिक अंतर: लिंग और शैली के प्रति संवेदनशील कंप्यूटर विज्ञान कक्षा का पोषण। ऑस्ट्रेलेशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 26(7), 1090–1103.

मॉक, के. एल. (2020). व्यक्तित्व प्रकार, आत्म-प्रभावकारिता और सीखने की शैली वरीयता: मिसौरी में नौवीं कक्षा के छात्रों का एक मात्रात्मक अध्ययन [डॉक्टरेट शोध प्रबंध, लिंडनवुड विश्वविद्यालय, शिक्षा विद्यालय]।

नक़वी, ए., एवं नक़वी, एफ. (2017). भारत में स्नातकोत्तर प्रबंधन छात्रों की सीखने की शैली, लिंग और शैक्षणिक प्रदर्शन पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट साइंसेज, 6(1), 1–16.

फॉन्गप्लोएनपिस, एस., एवं समार्ट, एन. (2018). व्यक्तित्व प्रकारों और संज्ञानात्मक अधिगम शैलियों के बीच संबंध। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड एप्लाइड साइंस, 4(12), 26–30।

पुजी, आर. पी. एन., एवं अहमद, ए. आर. (2016)। उच्च शिक्षा में इतिहास अधिगम में एमबीटीआई व्यक्तित्व प्रकारों की अधिगम शैली। पीपीआई-यूकेएम का वैज्ञानिक जर्नल, 3(6), 289–295।

श्रीनिधि, एस., एवं हेलेना, टी. (2017)। फर्नाल्ड, केलर, ऑर्टन, गिलिंगम, स्टिलमैन, मोंटेसरी और नील डी. फ्लेमिंग के शोध पर आधारित अधिगम शैलियाँ। बहुविषयक क्षेत्र में नवीन अनुसंधान के लिए शैक्षिक जर्नल, 3(4), 17–25।

टॉमलिन्सन, सी. ए. (2017)। शैक्षणिक रूप से विविध कक्षाओं में निर्देश में अंतर कैसे करें (तीसरा संस्करण)। अलेक्जेंडरिया, वीए: यूएसए।